ज्ञानमीमांसीय प्रत्ययवाद (Idealism) —

तत्वमीमांसा के अंतर्गत हम प्रत्ययवाद की चर्चा कर चुके हैं। यहां ज्ञानमीमांसीय आधार पर प्रत्ययवाद की व्याख्या की जाएगी। एक तत्वमीमांसीय सिद्धांत के रूप में प्रत्ययवाद इस प्रश्न का उत्तर देता है कि मौलिक सत्ता का स्वरूप क्या है? इस संदर्भ में इसका उत्तर है कि मौलिक सत्ता का स्वरूप मन या चेतना या प्रत्यय या बुद्धि का स्वरूप है। एक ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत के रूप में प्रत्ययवाद इस प्रश्न का उत्तर देता है कि ज्ञान में ज्ञाता के संबंध में ज्ञेय पदार्थ की स्थिति क्या रहती है। और इस प्रश्न के सम्बन्ध में उसका उत्तर है कि ज्ञेय पदार्थ की स्थिति क्या रहती है और इस प्रश्न के सम्बन्ध में उसका उत्तर है। तत्वमीमांसीय प्रत्ययवाद का विरोधी सिद्धांत है वास्तववाद (Realism) जिसके अनुसार ज्ञेय पदार्थ की स्थिति ज्ञाता से बिल्कुल स्वतंत्र होती है। उसका अस्तित्व किसी भी प्रकार ज्ञाता पर निर्भर नही है।

ज्ञानमीमांसीय प्रत्ययवाद के संबंध में साधारण मनुष्य को यह बात समझ से परे लगती है कि जो वस्तु उसे स्पष्टतः स्वतंत्र और

अलग दिखाई पड़ती है जिसे वे स्पर्श करते हैं और व्यवहार करते हैं। उसका अस्तित्व उस पर या उसके ज्ञान पर निर्भर कैसे करता है। प्रत्ययवादी दार्शनिक वस्तुओं के स्वरूप का विश्लेषण कर तर्कपूर्ण ढंग से यह सिद्ध कर देते हैं कि ज्ञेय पदार्थ ज्ञाता से स्वतंत्र नहीं है, उनका अस्तित्व ज्ञाता की चेतना पर निर्भर है।

अब यहाँ एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि तत्वमीमांसीय प्रत्ययवाद और ज्ञान-मीमांसीय प्रत्ययवाद के बीच क्या कोई संबंध है? क्या एक को स्वीकार करने पर दूसरे को भी मानना अनिवार्य हो जाता है। क्या दोनों परस्पर निर्भर हैं? इस प्रश्न का उत्तर है कि ज्ञानमीमांसीय प्रत्ययवाद में विश्वास करने पर तत्वमीमांसीय प्रत्ययवाद को स्वीकार करना अनिवार्य है। परन्तु तत्वमीमांसीय प्रत्ययवाद को स्वीकार करने पर यह अनिवार्य नहीं है कि हम ज्ञानमीमांसीय प्रत्ययवाद को भी स्वीकार करें। इस प्रकार तत्वमीमांसीय प्रत्यय-वाद ज्ञानमीमांसीय प्रत्ययवाद से इस अर्थ में स्वतंत्र है कि कोई व्यक्ति पहले का समर्थक होकर भी बिना किसी विरोध के दूसरे के समर्थक नहीं

भी हो सकता। इस तरह के स्पष्ट उदाहरण हमें प्लेटो और आचार्य शंकर के विचार में मिलते हैं। दोनों ही तत्वमीमांसीय स्तर पर प्रत्ययवादी है परंतु ज्ञानमीमांसीय स्तर पर वास्तववादी।

वस्तु के स्वरूप विश्लेषण से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि ज्ञाता से स्वतंत्र उसका अस्तित्व नही है। कोई भी वस्तु या तत्व आखिर क्या है? यदि हम इसकी विवेचना करे तो पाएंगे की वह रंग, रस, गंध, आकार आदि गुणों के सम्मिश्रण के अलावा और कुछ नही है।